''मीठे बच्चे – तुम बहुत ऊंच जाति के हो, तुम्हें ब्राह्मण से देवता बनना है इसलिए गन्दी विकारी आदतों को मिटा देना है''

प्रश्नः- किस बात का कनेक्शन इस पढ़ाई से नहीं है?

उत्तरः- ड्रेस आदि का कनेक्शन इस पढ़ाई से नहीं है, इसमें कोई ड्रेस बदलने की बात ही नहीं। बाप तो आत्माओं को पढ़ाते हैं। आत्मा जानती है यह पुराना पतित शरीर है, इसको कैसा भी हल्का सल्का कपड़ा पहनाओ, हर्जा नहीं। शरीर और आत्मा दोनों ही काले हैं। बाप काले (सांवरे) को ही गोरा बनाते हैं।

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) पवित्र ज्ञान को बुद्धि में धारण करने के लिए अपने बुद्धि रूपी बर्तन को सोने का बनाना है। याद से ही बर्तन सोने का होगा।

2) अभी ब्राह्मण बने हैं इसलिए शूद्रपने की सब आदतें मिटा देनी हैं। बहुत रॉयल्टी से रहना है। हम विश्व के मालिक बन रहे हैं – इस नशे में रहना है।

वरदानः- संगमयुग पर एक का सौगुणा प्रत्यक्षफल प्राप्त करने वाले पदमापदम भाग्यशाली भव

संगमयुग ही एक का सौगुणा प्रत्यक्षफल देने वाला है, सिर्फ एक बार संकल्प किया कि मैं बाप का हूँ, मैं मास्टर सर्वशक्तिमान् हूँ तो मायाजीत बनने का, विजयी बनने के नशे का अनुभव होता है। श्रेष्ठ संकल्प करना – यही है बीज और उसका सबसे बड़ा फल है जो स्वयं परमात्मा बाप भी साकार मनुष्य रूप में मिलने आता, इस फल में सब फल आ जाते हैं।

स्लोगनः- सच्चे ब्राह्मण वह हैं जिनकी सूरत और सीरत से प्योरिटी की पर्सनैलिटी वा रॉयल्टी का अनुभव हो।

अव्यक्त इशारे

परोपकार की भावना से सम्पन्न बन अपकारी पर भी उपकार करो

वर्तमान समय अनेक आत्माओं में स्व-उपकार करने की इच्छा है लेकिन हिम्मत और शक्ति नहीं है। ऐसी निर्बल आत्माओं का उपकार करने वाले आप पर-उपकारी बच्चे निमित्त हो। तो उपकार सच्चे दिल से होता है। विश्व राज्य अधिकारी बनना है तो स्व-उपकारी के साथ, पर-उपकारी बनो।

''मीठे बच्चे – अब इस मृत्युलोक का अन्त है, अमरलोक की स्थापना हो रही है, इसलिए तुम्हें मृत्युलोक वालों को याद नहीं करना है''

प्रश्नः- बाप अपने गरीब बच्चों को कौन-सी स्मृति दिलाते हैं?

उत्तरः- बच्चे, जब तुम वाइसलेस (पवित्र) थे तो बहुत सुखी थे। तुम्हारे जैसा साहूकार दूसरा कोई नहीं था, तुम अपार सुखी थे। धरती, आसमान सब तुम्हारे हाथ में था। अब बाप तुम्हें फिर से साहूकार बनाने आये हैं।

गीतः- नयनहीन को राह दिखाओ प्रभू...

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) एक बाप से बेहद का वर्सा लेना है। श्रेष्ठ कर्म करने हैं। जब बाप मिला है तो किसी भी प्रकार के धक्के नहीं खाने हैं।
2) बाप ने जो स्मृति दिलाई है, उसे स्मृति में रख अपार खुशी में रहना है। कोई भी देहधारी को याद नहीं करना है।

वरदानः- स्नेह के पीछे सर्व कमजोरियों को कुर्बान करने वाले समर्थी स्वरूप भव

स्नेह की निशानी है कुर्बानी। स्नेह के पीछे कुर्बान करने में कोई मुश्किल वा असम्भव बात भी सम्भव और सहज अनुभव होती है। तो समर्थी स्वरूप के वरदान द्वारा सर्व कमजोरियों को मजबूरी से नहीं दिल से कुर्बान करो क्योंकि सत्य बाप के पास सत्य ही स्वीकार होता है। तो सिर्फ बाप के स्नेह के गीत नहीं गाओ लेकिन स्वयं बाप समान अव्यक्त स्थिति स्वरूप बनो जो सब आपके गीत गायें।

स्लोगनः- संकल्प वा स्वप्न में भी एक दिलाराम की याद रहे तब कहेंगे सच्चे तपस्वी।

अव्यक्त इशारे

परोपकार की भावना से सम्पन्न बन अपकारी पर भी उपकार करो

बापदादा सदा श्रीमत देते हैं कि मन में हर आत्मा के प्रति शुभ भावना और शुभ कामना रखो अपकारी पर भी उपकार की वृत्ति रखो, संकल्प सदा सर्व के प्रति श्रेष्ठ हो, नि:स्वार्थ हो, सदा दातापन की भावना हो। सदा स्व परिवर्तन अथवा स्व के श्रेष्ठ कर्मों द्वारा औरों को श्रेष्ठ कर्म की प्रेरणा देने वाले कर्म हों, तब कहेंगे परोपकारी।

''मीठे बच्चे – बाप को याद करने की भिन्न-भिन्न युक्तियाँ रचो, पुरुषार्थ कर चार्ट रखो, थको नहीं, तूफानों में अडोल रहो''

प्रश्नः- बच्चों को अपना कौन-सा अनुभव आपस में एक दो को सुनाना चाहिए?

उत्तरः- हम बाप को कितना समय और कैसे याद करते हैं! भोजन के समय बाप की याद रहती है या अनेक प्रकार के विचार आ जाते हैं! बाबा कहते बच्चे ट्राई करके देखो। भोजन पर बाप के सिवाए दूसरा कुछ याद तो नहीं आता है! फिर आपस में एक दो को अनुभव सुनाओ। 2- कोई भी दर्दनाक सीन देखते हमारी स्थिति कैसी रही! इसका भी अनुभव सुनाना चाहिए।

गीतः- लाख जमाने वाले...

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) सूर्यवंशी बनने के लिए मात-पिता को पूरा-पूरा फॉलो करना है। याद में रहने की और आप समान बनाने की मेहनत करनी है।
2) पुरुषार्थ कर श्रीमत पर चल शान्त रहना है। बड़ों की आज्ञा माननी है।

वरदानः- एक बल एक भरोसे के आधार पर मंजिल को समीप अनुभव करने वाले हिम्मतवान भव

ऊंची मंजिल पर पहुँचने से पहले आंधी तूफान लगते ही हैं, स्टीमर को पार जाने के लिए बीच भंवर से क्रास करना ही पड़ता है इसलिए जल्दी में घबराओ मत, थको वा रुको मत। साथी को साथ रखो तो हर मुश्किल सहज हो जायेगी, हिम्मतवान बन बाप की मदद के पात्र बनो। एक बल एक भरोसा – इस पाठ को सदा पक्का रखो तो बीच भंवर से सहज निकल आयेंगे और मंजिल समीप अनुभव होगी।

स्लोगनः- विश्व कल्याणकारी वह है जो प्रकृति सहित हर आत्मा के प्रति शुभ भावना रखते हैं।

अव्यक्त इशारे

परोपकार की भावना से सम्पन्न बन अपकारी पर भी उपकार करो

हर आत्मा के प्रति रहम की भावना, सदा सहयोग की भावना, हिम्मत बढ़ाने की भावना हो। हर परिस्थिति में, हर कार्य में, हर सहयोगी संगठन में नि:स्वार्थपन हो, तब कहेंगे पर-उपकार की भावना। जैसे ब्रह्मा बाप ने स्व के प्रति कुछ भी स्वीकार नहीं किया। न महिमा स्वीकार की, न वस्तु स्वीकार की, न रहने का स्थान स्वीकार किया। स्थूल और सूक्ष्म सदा ''पहले बच्चे'', इसको कहते हैं पर-उपकारी, इसमें फॉलो फादर कर समान बनो।

''मीठे बच्चे – आत्मा और शरीर जो पतित और काले बन गये हैं, बाप की याद से इन्हें पावन बनाओ क्योंकि अब पावन दुनिया में चलना है''

प्रश्नः- भगवान किन बच्चों को मिलता है, बाप ने कौन सा हिसाब बतलाया है?

उत्तरः- जिन्होंने शुरू से भक्ति की है उन्हें ही भगवान मिलता है। बाबा ने यह हिसाब बतलाया है कि सबसे पहले तुम भक्ति करते हो इसलिए तुम्हें ही पहले-पहले भगवान द्वारा ज्ञान मिलता है, जिससे फिर तुम नई दुनिया में राज्य करते हो। बाप कहते हैं तुमने आधाकल्प मुझे याद किया है अब मैं आया हूँ, तुम्हें भक्ति का फल देने।

गीतः- मरना तेरी गली में...

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) कांटों से फूल बनाने वाला मोस्ट बिलवेड एक बाप है, उसे बहुत लव से याद करना है। खुशबूदार पावन फूल बन सबको सुख देना है।
2) यह नॉलेज (पढ़ाई) सोर्स ऑफ इनकम है, इससे 21 जन्म के लिए तुम बहुत बड़े आदमी बनते हो इसलिए इसे अच्छी रीति पढ़ना और पढ़ाना है। आत्म-अभिमानी बनना है।

वरदानः- जिम्मेवारी सम्भालते हुए आकारी और निराकारी स्थिति के अभ्यास द्वारा साक्षात्कारमूर्त भव

जैसे साकार रूप में इतनी बड़ी जिम्मेवारी होते हुए भी आकारी और निराकारी स्थिति का अनुभव कराते रहे ऐसे फॉलो फादर करो। साकार रूप में फरिश्तेपन की अनुभूति कराओ। कोई कितना भी अशान्त वा बेचैन घबराया हुआ आपके सामने आये लेकिन आपकी एक दृष्टि, वृत्ति और स्मृति की शक्ति उनको बिल्कुल शान्त कर दे। व्यक्त भाव में आये और अव्यक्त स्थिति का अनुभव करे तब कहेंगे साक्षात्कारमूर्त।

स्लोगनः- जो सच्चे रहमदिल हैं उन्हें देह वा देह-अभिमान की आकर्षण नहीं हो सकती।

अव्यक्त इशारे

परोपकार की भावना से सम्पन्न बन अपकारी पर भी उपकार करो

ज्ञानी तू आत्मा सदैव हर एक के प्रति मास्टर स्नेह का सागर होते हैं। बिना स्नेह के उसके पास और कुछ है ही नहीं। कोई भी आयेगा तो उसे स्नेह ही देंगे। आजकल सम्पत्ति से भी ज्यादा स्नेह की आवश्यकता है। स्नेह की शक्ति से दुश्मन को भी मित्र बना सकते हो। अपकारियों पर भी उपकार कर सकते हो।

''मीठे बच्चे – इस पुरानी दुनिया से बेहद के वैरागी बनो क्योंकि बाप तुम्हारे लिए नया स्वर्ग रूपी घर बना रहे हैं''

प्रश्नः- इस अविनाशी रुद्र यज्ञ में किन-किन बातों के कारण ही विघ्न पड़ते हैं?

उत्तरः- यह शिवबाबा का रचा हुआ अविनाशी रुद्र यज्ञ है, इसमें तुम मनुष्य से देवता बनने के लिए पवित्र बनते हो, भक्ति आदि छोड़ते हो इस कारण विघ्न पड़ते हैं। लोग कहते हैं – शान्ति हो, विनाश न हो और बाप ने यह रुद्र ज्ञान यज्ञ रचा ही है पुरानी दुनिया के विनाश के लिए। इसके बाद ही शान्ति की दुनिया आयेगी।

धारणा के लिये मुख्य सार:-

1) मुख से सदैव ज्ञान अमृत निकालना है। ज्ञान से ही सबकी सद्गति करनी है। एक बाप से ही ज्ञान सुनना है, दूसरों से नहीं।

2) चढ़ती कला में जाने के लिए चलते-फिरते बाप को याद करने का अभ्यास करना है। इस पुरानी दुनिया, पुराने चोले से ममत्व मिटा देना है।

वरदानः- बुद्धि रूपी पाँव द्वारा इस पाँच तत्वों की आकर्षण से परे रहने वाले फरिश्ता स्वरूप भव

फरिश्तों को सदा प्रकाश की काया दिखाते हैं। प्रकाश की काया वाले इस देह की स्मृति से भी परे रहते हैं। उनके बुद्धि रूपी पाँव इस पाँच तत्व की आकर्षण से ऊंचे अर्थात् परे होते हैं। ऐसे फरिश्तों को माया व कोई भी मायावी टच नहीं कर सकते। लेकिन यह तब होगा जब कभी किसी के अधीन नहीं होंगे। शरीर के भी अधिकारी बनकर चलना, माया के भी अधिकारी बनना, लौकिक वा अलौकिक संबंध की भी अधीनता में नहीं आना।

स्लोगनः- शरीर को देखने की आदत है तो लाइट का शरीर देखो, लाइट रूप में स्थित रहो।

अव्यक्त इशारे

परोपकार की भावना से सम्पन्न बन अपकारी पर भी उपकार करो

मन्सा सेवा करने के लिए सर्व के प्रति सदा ही श्रेष्ठ और निःस्वार्थ संकल्प हों, सदा पर-उपकार की भावना हो। अपकारी पर भी उपकार की श्रेष्ठ शक्ति हो। सदा दातापन की भावना हो। सदा स्व परिवर्तन, स्व के श्रेष्ठ कर्म द्वारा औरों को श्रेष्ठ कर्म की प्रेरणा देने वाले हो।

''मीठे बच्चे – हियर नो ईविल, एक बाप से ही सुनना है, गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान रहना है''

प्रश्नः- किस खेल को यथार्थ रीति जानने वाले बच्चे कभी मूँझ नहीं सकते हैं?

उत्तरः- दु:ख और सुख, भक्ति और ज्ञान का जो खेल चलता है, इसको यथार्थ रीति जानने वाले कभी मूँझते नहीं। तुम जानते हो भगवान किसी को दु:ख नहीं देता, वह है दु:ख हर्ता सुख कर्ता। जब सभी दु:खी हो जाते हैं, तब दु:खों से लिबरेट करने के लिए वह आते हैं।

गीतः- यह कौन आज आया सवेरे-सवेरे...

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) एक बाप से ही रुहानी बातें सुननी है। किसी से दूसरी बातों का वाद-विवाद नहीं करना है।
2) देही-अभिमानी बनने की मेहनत करनी है। सतोप्रधान बनने के लिए एक बाप की याद में रहना है।

वरदानः- कर्म द्वारा गुणों का दान करने वाले डबल लाइट फरिश्तामूर्त भव

जो बच्चे कर्मणा द्वारा गुणों का दान करते हैं उनकी चलन और चेहरा दोनों ही फरिश्ते की तरह दिखाई देते हैं। वे डबल लाइट अर्थात् प्रकाशमय और हल्केपन की अनुभूति करते हैं। उन्हें कोई भी बोझ महसूस नहीं होता है। हर कर्म में मदद की महसूसता होती है। जैसे कोई शक्ति चला रही है। हर कर्म द्वारा महादानी बनने के कारण उन्हें सर्व की आशीर्वाद वा सर्व के वरदानों की प्राप्ति का अनुभव होता है।

स्लोगनः- सेवा में सफलता का सितारा बनो, कमज़ोर नहीं।

अव्यक्त इशारे

परोपकार की भावना से सम्पन्न बन अपकारी पर भी उपकार करो

कोई कैसी भी आत्मा सम्पर्क में आये – चाहे सतोगुणी, चाहे तमोगुणी सभी के प्रति शुभ चिन्तक अर्थात् अपकारी के ऊपर भी उपकार करने वाले। कभी किसी आत्मा के प्रति घृणा दृष्टि नहीं क्योंकि जानते हैं कि यह अज्ञान के वशीभूत है अर्थात् बेसमझ बच्चा है। बेसमझ बच्चे के कोई भी कर्म पर घृणा नहीं होती है और ही बच्चे के ऊपर रहम वा स्नेह आयेगा।

''अब स्मृति स्वरूप अनुभव की अथॉरिटी बनो, ज्वालामुखी योग द्वारा सबको लाइट माइट की किरणों का सहयोग दो''

- आज बापदादा अपने सामने या चारों तरफ के अपने छोटे से संसार को देख हर्षित हो रहे हैं क्योंकि यह संसार है छोटा लेकिन अति प्यारा है क्योंकि इस संसार की एक-एक आत्मा श्रेष्ठ आत्मा है।
- समय निकालो, बार-बार यह स्वमान की माला पहनने से, अनुभव करने से जो बापदादा ने स्वराज्य अधिकारी बनाया है, वह हो नहीं सकता कि स्वमान आपके आर्डर पर नहीं चले। सिर्फ सीट पर सेट रहो।
- अनुभव की अथॉरिटी सबसे बड़े ते बड़ी है। स्मृति स्वरूप रहना इसको कहा जाता है अनुभव। तो अनुभव में खो जाना जो स्वरूप की स्मृति रखते हैं, उस स्वरूप की अनुभूति में रहना इसकी और आवश्यकता है क्योंकि अनुभव कभी भी भूलता नहीं है।
- ज्वालामुखी योग के ऊपर और अटेन्शन दो जिससे स्वभाव संस्कार परिवर्तन में सहयोग मिलेगा। अटेन्शन बढ़ा है तो टेन्शन संस्कारों का कम होता जायेगा।

वरदान:- अपने स्वरूप द्वारा भक्तों को लाइट के क्राउन का साक्षात्कार कराने वाले इष्ट देव भव

जबसे आप बाप के बच्चे बने, पवित्रता की प्रतिज्ञा की तो रिटर्न में लाइट का ताज प्राप्त हो गया। इस लाइट के ताज के आगे रत्न जड़ित ताज कुछ भी नहीं है। जितना-जितना संकल्प, बोल और कर्म में प्योरिटी को धारण करते जायेंगे उतना यह लाइट का क्राउन स्पष्ट होता जायेगा और इष्ट देव के रूप में भक्तों के आगे प्रत्यक्ष होते जायेंगे।

स्लोगन:- सदा बापदादा की छत्रछाया के अन्दर रहो तो विघ्न-विनाशक बन जायेंगे।

अव्यक्त इशारे

परोपकार की भावना से सम्पन्न बन अपकारी पर भी उपकार करो

जैसे बापदादा सदा बच्चों के साथ हर कदम में सहयोगी हैं और अन्त तक रहेंगे। बाप को किसी के प्रति घृणा नहीं होती। सदैव अपकारी के भी शुभ चिन्तक हैं, ऐसे फॉलो फादर। हर आत्मा के प्रति सदा शुभ भाव और भावना रखो। इसने ऐसा क्यों किया, यह सोचने के बजाए इस आत्मा का कल्याण कैसे हो – यह सोचो तब कहेंगे शुभचिंतक वा विश्व कल्याणकारी आत्मा।